International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.2 Nov – Dec 2022

गुरु शिष्य परंपरा

प्रा. डॉ. अंजू सुर्यभान फुलझेले
सहा. प्राध्यापक, संगीत विभाग अमोलकचंद महाविद्यालय, यवतमाळ
Corresponding Author- **प्रा. डॉ. अंजू सुर्यभान फुलझेले**
EMail: rpverna@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7436733

प्रस्तावना :

भारत का संगीत समस्त भूमण्डलीय संगीत में अपनी अलग विशेषता रखता है । भारतीय संगीत विश्व भर में अपनी असीम मधुरता, प्रभावशीलता तथा महानता के लिए सर्वविदित है । गुरु शिष्य परंपरा संगीत की सबसे प्राचीनतम प्रणाली मानी जाती है । वैदिक काल से ही संगीत शिक्षा गुरुमुख से ही दी जाती थी । जिसका वर्णन पौराणिक ग्रंथों में मिलता है । शिष्य गुरुकुल में रहकर गुरु की सेवा करता, उनके अनुषासन का पालन करता, अपने मन को संयमित रखकर जीवन व्यतीत करता । शिष्य नियमित साधना करके गुरु व्दारा दी गई संपूर्ण शिक्षा को पूरा कंठस्थ करता है । भारतीय संगीत के प्रत्येक काल में गुरु को पुजनीय स्थान प्राप्त रहा है । भारत की शिक्षा पध्दति गुरुकुलों से प्रारंभ हुई, जहॉ गुरु–शिष्य का सीध संबंध होता था । गुरु–शिष्य परम्परा में विद्यार्थी व्दारा गुरुसेवा एवं अनुषासन की विशेष बात की गई है । गुरु सद्गुणों का निर्माता है ।

बारबार आनेवाले शब्द – गुरुशिष्य परंपरा, संगीतकला, शिष्य, राग, गायक, घराना.

संगीत के क्षेत्र में स्वरज्ञान, ज्ञान देने वाले व्यक्ती को गुरु कहने की पध्दती प्राचीन काल से चली आ रही है । संगीत यह सर्जनशील कला है । रागदारी संगीत के कई स्वरसंवाद, स्वरसमुहो के सौंदर्य स्वरों के रखाववाली अनेको रचनाए, मानव मन पर होनेवाले स्वरों के परिणाम, इत्यादी कठिन विषय जब गुरु व्दारा आत्मसात करते है तभी हम सुरों के सच्चे साधक बन सकते है । रागस्वरुप का पुरा ज्ञान गुरु ही हमें देता है । गुरु शिष्य से संवाद साधता है, उसके भीतर पहुॅचकर वह उसे प्रेरित करता है, उसका भय दुर करता है । अपने शिष्य की इन सभी मनोवृत्ती का गुरु अभ्यास करता है और वह जानता है की कौनसे शिष्य की काबीलीयत कैसी है, किस पर ज्यादा मेहनत करनी है, वे यह भलीभांती जानते है । इन सभी बातों का ध्यान रखनेवाला ही श्रेष्ठ गुरु होता है ।

गुरु के समान शिष्य को भी वैसास होना चाहिए । गुरु के प्रती श्रध्दा, सिखने की जिज्ञासा, नम्रता, मेहनत करनेवाला ऐसा आदर्श शिष्य होना चाहिए । प्राचीन भारत में केवल संगीत कला ही नहीं, संपूर्ण शिक्षण प्रणाली में ही गुरुशिष्य परंपरा होती है । प्राचीन भारतीय शिक्षण पध्दती गुरु की श्रेष्ठापर केंद्रित हुई है । संगीत के क्षेत्र में गुरु को बहोत बडा सम्मान मिला है । गुरु का स्थान सर्वोच्च है । गुरुको अनेको राजा महाराजाओ व्दारा राजाश्रय दिया गया था । जहॉ वे दिन रात संगीत साधना करके बडे दिल से वह विद्यादान करते थे और शिष्य भी उतनीही आत्मीयता से कठोर परिश्रम करके विद्या ग्रहण करते थे और गुरुदक्षिणा देकर अपने गुरु को संतुष्ट करते थे । इस प्रकार की परंपरा होने के कारण अपने भारत में गुरु–शिष्य की महान परंपरा दिखायी देती है, जैसे – स्वामी हरिदास और तानसेन, वासुदेवबुवा जोशी और बाळकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर, अल्लादिया खॉ और केसरबाई केरकर, मास्टर कृष्णराव और पं. राम मराठे, पं. वि. दि. पलुस्कर, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. सवाई गंधर्व, पं. भिमसेन जोशी, मोगुबाई कुरडीकर, किशोरी आमोणकर, इ. आदर्श गुरु–शिष्य की परंपरा हमारे संगीत के क्षेत्र में दिखाई देती है ।

वैदिक साहित्य में भी साम प्रशिक्षण के तीन रुप प्रचलित होने के संकेत मिलते है – १) पिता–पुत्र के रुप में, २)

गुरु–शिष्य परम्परा के रुप में, ३) गुरुकुल में आकर शिक्षा ग्रहण करने के रुप में.

महाकाव्यकाल में शिक्षण के लिए गुरु–शिष्य प्रणाली ही थी । ६ वी एवं ७ वी शताब्दी में नालन्दा विश्वविद्यालय में संगीत शिक्षा की व्यवस्था थी । १० वी शताब्दी में बीजापुर जिले के सलोरगी के मंदिर के एक कक्ष में संगीत विद्यालय की स्थापना ११ वी शताब्दी चिगलीपुरक जिले में वेंकेटेश्वर के मंदिर में तथा १४ वी शताब्दी में तिरोर्वर्मिपुर एवं मल्कापुरक में विद्यामंदिरों की स्थापना हुई । उपर्युक्त बातों से यह प्रतीत होता है कि संगीत के लिए गुरु–शिष्य परम्परा अति प्राचीन है बाद में जाकर संगीत के शिक्षा के लिए मंदिर विद्यालय विश्वविद्यालय एवं अनेकों स्थानों की व्यवस्था हुई है ।[१] गुरुकुल में रहकर जीवन बिताने एवं सतत साधना करते हुए गुरु व्दारा दी गई संपूर्ण शिक्षा को पूरा कंठस्थ करना ही शिक्षा का साधन कहते है । (भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य – डॉ. पूनम दत्ता, पृ. ७०)

संगीत का साधन मानवी आवाज है उसका माध्यम है 'स्वर' । 'स्वर' मानवी आवाज का एक अत्यंत गूढ धर्म है । उसका संगोपन–संवर्धन कर, उस पर अलग–अलग अलंकार चढ़ाकर समृध्द किया गया 'गला' गुरु अपने सद्शिष्य के गले में उतारने का प्रयास करता है, जिसे तालीम कहते है इस प्रक्रिया के व्दारा ही संगीत कला का आदान–प्रदान होता है । हिन्दुस्थानी गायन की ख्याल विद्या वर्तमान समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख गायन विद्या है । भारत का शास्त्रीय संगीत अपने कठोर नियम, शुध्दता और परम्परा के लिए विख्यात है । भारतीय संगीत में समय–समय पर परिवर्तन होते रहे है । प्राचीन भारतीय संगीत की प्रचलित गायन, वादन विद्याओं में भी निरंतर बदलाव होते रहे है । जातिगायन, प्रबंध गायन, धुपद गायन और आधुनिक ख्याल गायन में संगीत की परिवर्तनशीलता को सिध्द कर दिया है । संगीत में जहॉ ख्याल गायन में संगीत की परिवर्तनशीलता को सिध्द कर दिया है । संगीत में जहॉ ख्याल गायन अब बहुप्रचलित वहॉ स्वाभाविक रुप से ख्याल के घरानों पर भी विचार होता है । घराना शब्द का अर्थ है घर । घराना से मतलब है कोई विशिष्ट शैली । घराना रीति या शैली का दुसरा नाम है । प्राचीन काल से लेकर आज तक संगीत कला में घराने को बडा महत्व दिया गया है । घराने से मतलब है कोई विशिष्ट गुरु परम्परा । वास्तव में प्राचीन भारतीय महत्व की प्रभावशाली परम्परा का दर्पण यह घराने ही है, जिनके माध्यम से भारतीय संगीत की शुध्दता और सूक्ष्मता का सौंदर्य प्रतिबिम्बित होता है ।

ज्ञान चाहे संसार का हो अथवा आध्यात्म का, विज्ञान का हो अथवा कला का, संगीत का हो अथवा नृत्य का, गुरु की नितांत अनिवार्यता आवश्यक है । बिना गुरु के व्यक्ति के न मानसिक शक्तियों का विकास हो सकता है न चेतना का । भारतीय संगीत का क्षेत्र व्यापक है तथा संगीत सात्विक विचारधारा गुरु अपने पास आए शिष्य की सर्वप्रथम चित्त शुध्दि करते है, उसे कठिन साधना से गुजारते है ।

संगीत विद्या सदैव गुरुमुख से सिखी जाती रही है । गुरु और उसका शिष्य इन्ही के बीच संगीत की खास तालिम दी जाती रही है । आज संगीत का जो सामूहिक तथा बडे पैमाने पर अध्यापन किया जाता है वह २० वी शताब्दी की ही देन है । इससे पूर्व यह प्रणाली नही थी । शिष्य बडी श्रध्दा से कला की बारिकीयों को सिखाते रहते है । उस्ताद की सारी विशेषताएँ शागिर्द के कंठ अथवा हाथ में आ जाती थी । उस्ताद हमेशा ही चाहता था की शागिर्द उसी के जैसा अभ्यासू वृत्ती का हो । किसी भी घराने में 'गुरु' या 'उस्ताद' केंद्र बिंदू होता है ।

संगीत के सतत विकास का श्रेय गुरु–शिष्य परंपरा को जाता है । गुरु ने अपनी तपस्या, साधना और प्रयोगों से जितना जाना वह ज्ञान सब उन्होंने अपने शिष्यों में बाट दिया । शिष्यों ने अपने गुरु व्दारा ग्रहण की हुई इन विधि को सहेजा, संवारा और उसे अपनी साधना व्दारा विकसित किया । यह निर्विवाद है कि गुरु–शिष्य परंपरा ने ही संगीत को अधिक समृध्द एवं सम्पन्न बनाया है ।

घरानों में मुख्य तीन प्रकार बताए जाते है ।

१) सामान्य वर्ग : इसमें बड़े—बड़े गायकों का गाना सुनकर उन्हे संगीत शिक्षा दी जाती थी ।

२) विशिष्ट वर्ग : इसमें ऐसे विद्यार्थी होते थे जिनपर गुरु का विश्वास था और गुरु जानते थे की ये शिष्य बड़े होकर खुब नाम कमाएंगे ।

३) बहुत खास वर्ग : इसमें केवल गुरु के वंशजों की ही गणना होती थी । इसके अलावा ऐसे शिष्यों का समावेश होता था की जो गुरुगृह रहकर गुरुकी कृपा प्राप्त कर सकते थे । इस प्रकार घराना पध्दती में गुरु—शिष्य परंपरा का बहुत महत्व था ।

निष्कर्ष :

गुरु—शिष्य परम्परा का स्वरुप काल के अनुरुप बदलता गया । प्राचीन काल में गुरुगृह रहकर शिष्यों को जो विद्या आत्मसात करनी पडती थी, शिष्य को गुरु के घर रहकर ही शिक्षा अर्जीत करनी पडती थी और शिष्य भी गुरु के परिवार का एक हिस्सा बन जाता था । परंतु आधुनिक समय में इसका स्वरुप बदल गया है । आधुनिक युग को यंत्र युग कहा जाता है । संगीत का विद्यार्थी उसका पुरा पुरा लाभ उठा रहा है । उसे घर बैठे इंटरनेट के माध्यम से बडे—बडे कलाकारों का गायन—वादन घर बैठे सिखने मिल रहा है । ये यंत्र विद्यार्थीयों के गुरु बन रहे है । उसी प्रकार बदलते काल में घर में गुरुकुल/गुरुगृह नही हो सकते जिस कारण अब गुरुकुल विद्यार्थीयों के लिए बाहर बन रहे है और वहॉ संगीत की तालीम दी जा रही है । आधुनिक काल में संगीत शिक्षा देनेवाली विविध पध्दतीयॉ दिखायी देती है, जैसे कम्प्युटर, टेपरेकॉर्डर, मोबाईल फोन, इ. उपकरणों की वजह से संगीत सिखने में, आत्मसात करने में सुलभता होने लगी है, परंतू ऐसा होकर भी गुरुमुखी विद्या ही सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है । कितने भी आधुनिक साधन प्रचार में आए हो, फिरभी प्रत्यक्ष गुरु के मुख से, गुरु के सामने बैठकर जो संगीत शिक्षा ग्रहण की जाती है वही सर्वश्रेष्ठ शिक्षा है ।

संदर्भ :

१) भारतीय संगीत : शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. ७०.
२) संगीत कला विहार.
३) संगीत मासिका.
४) संगीतविशारद.

प्रा. डॉ. अंजू सुर्यभान फुलझेले